GIRLS' HIGH SCHOOL & COLLEGE, PRAYAGRAJ

HINDI LANGUAGE TEST PAPER – 1

SESSION- 2020-2021

CLASS – 8th A,B,C,D,E

Time : 30 Minutes **Max.marks: 25**

निर्देश – यह परीक्षा अभिभावकों के निरीक्षण में होनी है। अभिभावक यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी इस प्रश्न-पत्र को हल करने में केवल 30 मिनट लें। विद्यार्थी अभिभावकों की सहायता से मूल्यांकन करके अंक देंगे। सुधार के लिए अभिभावक लाल या किसी रंगीन कलम का प्रयोग कर सकते हैं। पिता या माता दिए गए अंक की जगह पर हस्ताक्षर करें।

मूल्यांकित वर्कशीट को संरक्षित रखना है और जब विद्यालय खुले तो जमा करना है।

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

परमात्मा इतना दयालु है कि मनुष्य को जन्म देने के पहले ही उसके लिए प्रकृति के माध्यम से सारी व्यवस्था कर देता है। प्रकृति से हमें हर वह वस्तु प्राप्त होती है जिसकी हमें आवश्यकता होती है। सूरज, चाँद,सितारे, धरती, पवन, आकाश,जल,आग आदि सभी हमें देते ही तो हैं; जो प्रकृति के ही अंग हैं। पर्वत, नदियाँ, झरने, पेड़-पौधे, बादल, समुद्र, पशु-पक्षी आदि सभी हमारा उपकार करते हैं ; किन्तु अहंकारी मनुष्य इनके उपकार को नहीं मानता है।

यदि मनुष्य प्रकृति के उपकार को मानता होता तो ग्लोबल वार्मिंग ,पर्यावरणीय असंतुलन, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि विविध समस्याओं के कारण आज सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार नहीं मचा होता। थोड़े से संवेदनशील लोग ही इन समस्याओं के कारण जानने की इच्छा रखते हैं और उनके निराकरण की बात सोचते हैं। टेलीविजन के विभिन्न चैनलों पर इन समस्याओं को लेकर आये दिन चर्चा-परिचर्चा होती रहती है,लेकिन हमें उससे क्या लेना है। हमारे लिए तो टेलीविजन मनोरंजन का साधन मात्र है। हम उससे सीख लेना नहीं चाहते। हम केवल अपने लिए जीते हैं। हमनें दूसरों के बारे में सोचना छोड़ दिया है। लगता है हमारा हृदय संवेदनशून्य हो गया है । हम चाहते हैं कि स्वयं कभी न मरें, किन्तु दूसरों को काल के मुँह में ढकेलने से बाज़ नही आते । आखिर जो प्रकृति आपको जीवन देती है,उसे आप क्यों नष्ट करना चाहते हैं ? क्या इस धरा पर आप नदियों की धारा को रोक देना चाहते हैं ? क्या आपको उषाकाल में खगकुल की चहचहाहट अच्छी नहीं लगती ?क्या आप काम,क्रोध और लोभ के वश में होकर यह भूल गए हैं कि मनुष्य को अपनी करनी का फल अवश्य भोगना पड़ता है ? क्या जीवनदायिनी प्रकृति पर अत्याचार करते हुए आपको लाज नहीं आती ?तो याद रखिए, प्रकृति को अपना संतुलन बनाना आता है। वह परिश्रम करने वालों को उसके परिश्रम का इनाम देती है तो आलसियों को डंडा मारकर जगाती भी है। जब वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचार से कुपित होती है तो उसकी एक करवट से भयंकर आपदा भी आ जाती है।

प्रश्न-1- निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए - **5×1= 5**

(क) उपकार (घ) लेना

(ख) थोड़ा (ङ) भूलना

(ग) संवेदनशील

प्रश्न-2- निम्नलिखित शब्दों के लिए दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए – **5×1=5**

(क) सूरज (ख) धरती (ग) पवन

(घ) चाँद (ङ) आकाश

प्रश्न- 3- निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक- एक शब्द लिखिए - **5×1=5**

(क) जो कभी न मरे

(ख) उपकार को न मानने वाला

(ग) परिश्रम करने वाला

(घ) उपकार को मानने वाला

(ङ) जिसे लाज नहीं आती

प्रश्न-4- निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए - **5×1=5**

(क) फल (ख) काल (ग) अंग

(घ) कुल (ङ) शून्य

प्रश्न-5- निम्नलिखित तद्भव शब्दों के लिए तत्सम शब्द लिखिए - **3×1=3**

(क) सीख (ख) डंडा (ग) मुँह

प्रश्न-6- ऊपर लिखे गद्यांश में से किन्हीं दो विदेशी शब्दों को छाँटकर लिखिए - **2×1=2**

(क) ..... (ख) .....

END